इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

सफलता प्रदायक मंगलमूर्ति सिद्धि विनायक साधना

विनायक चतुर्थी - 18 जून

श्री गणेश का स्वरुप **शक्ति तत्व** और **शिव तत्व** का **साकार स्वरुप** है। और इन दोनों **तत्व** का **सुखद स्वरुप** ही किसी कार्य में **पूर्णता** ला सकता है। **गणेश शब्द** की **व्याख्या अत्यंत महत्वपूर्ण** है। गणेश का **'ग'** मन के द्वारा **बुद्धि** के द्वारा ग्रहण करने **योग्य, वर्णन** करने **योग्य** है जो सम्पूर्ण **भौतिक जगत** को स्पष्ट करता है और **'णे' मन, बुद्धि** और **वाणी** से परे, **ब्रह्मविद्या** स्वरुप **परमात्मा** को प्रकट करता है और इन दोनों के **'ईश'** अर्थात् **स्वामी** को **गणेश** कहा गया है। **शत्रु बाधा, शांति** तथा **तांत्रोक्त साधनायें** प्रारम्भ करने से पूर्व **प्रत्येक साधक** को यह **साधना** अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिये।

शूर्प धारिणी धूम्र साधना

धूमावती जयंती - 22 जून

दस महाविद्याओं की **साधना** करना जीवन की **सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि** मानी जाती है। ये **दस प्रकार** की **शक्तियों** का **प्रतीक** हैं और **महत्वपूर्ण अवसर** पर जीवन में जिस **शक्ति तत्व** की कमी में होती है, उस कमी को पूरा करने के लिए **महाविद्या की साधना, उपासना** करना **जीवन का सौभाग्य** माना जाता है। **दस महाविद्याओं** के क्रम में **धूमावती सप्तम महाविद्या** है। यह **शत्रुओं का भक्षण** करने वाली **महाशक्ति** और **दुःखों की निवृत्ति** करने वाली **महादेवी** हैं। इस **साधना** को सम्पन्न करने से **रोग, ऋण, दुर्भाग्य, दरिद्रता** और **नौ प्रकार के शत्रुओं** से **मुक्ति** मिलती है।

निर्जला एकादशी साधना

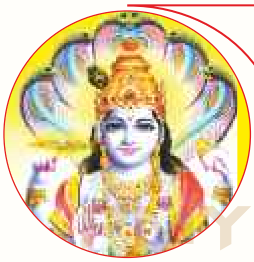

निर्जला एकादशी - 25 जून

वर्ष के सभी **चौबीस एकादशियों** में से **निर्जला एकादशी** सबसे **महत्वपूर्ण एकादशी** है, जो सभी **चौबीस एकादशी** हैं उनका निचोड़ है। **साधक** अपने जीवन के **प्रत्येक क्षण** का **आनन्द** लेते हुए, प्रत्येक क्षण को जीते हुए वह अपना **अभिष्ट सिद्ध** कर पाये तथा **जीवन** में **धर्म** अर्थात् **कर्तव्य, अर्थ** अर्थात् **धन, काम** अर्थात् **आनन्द तत्व** की प्राप्त कर **पूर्ण तृप्ति** पा सके। **श्रीकृष्ण, भगवान विष्णु** के **अवतार** थे, इस **साधना** के माध्यम से ही **पांडवों** को **श्रीकृष्ण** की **असीम कृपा** प्राप्त हो सकी और उनमें निरन्तर **धर्म के अनुरुप** कार्य करने की **चेतना** व्याप्त हो सकी।

षोड़ष योगिनी साधना

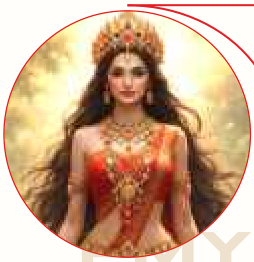

योगिनी एकादशी - 10 जुलाई

योगिनीयां तो **अप्सराओं** का वह रुप हैं जो केवल देने में **विश्वास** रखती हैं। वे **साधक** के **भौतिक-आध्यात्मिक** जीवन के **द्वार** खोलने में **समर्थ** हैं। **तंत्र शास्त्र** में **भगवान शिव** नें कहा है कि **"योगिनी साधना ही एकमात्र ऐसी साधना है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन के समस्त कार्यों को पूर्णता देते हुए भौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है।"** इस **साधना** के माध्यम से **मोक्ष** व **भोग की प्राप्ति** होती है, साथ ही साथ **साधक** के मन की समस्त **अतृप्त ईच्छाओं** को **योगिनीयां** पूर्ण करती हैं, जिससे जीवन में **आनन्द भाव** की प्राप्ति **संभव** हो पाती है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।